कुत्ते का बैरी कुत्ता

एक गाँव में चित्रांग नाम का कुत्ता रहता था। वहां दुर्भिक्ष पड गया अन्न के अभाव में कई कुत्तों का वंशनाश हो गया। चित्रांग ने भी दुर्भिक्ष से बचने के लिये दूसरे गाँव की राह ली। वहाँ पहुँच कर उसने एक घर में चोरी से जाकर भरपेट खाना खा लिया। जिसके घर खाना खाया था उसने तो कुछ नहीं कहा, लेकिन घर से बाहर निकला तो आसपास के सब कुत्तों ने उसे घेर लिया। भयङकर लडाई हुई। चित्रांग के शरीर पर कई घाव लग गये। चित्रांग ने सोचा- 'इससे तो अपना गाँव ही अच्छा है, जहाँ केवल दुर्भिक्ष है, जान के दुश्मन कुत्ते तो नही है।'

यह सोच कर वह वापिस आ गया । अपने गाँव आने पर उससे सब कुत्तों ने पूछा- "चित्रांग ! दूसरे गाँव की बात सुना। वह गाँव कैसा है? वहाँ के लोग कैसे है? वहाँ खाने-पीने की चीजे कैसी है?"

चित्रांग ने उत्तर दिया ----"मित्रो, उस गाँव में खाने-पीने की चीजें तो बहुत अच्छी हैं, और गृह-पत्नियाँ भी नरम स्वभाव की हैं; किन्तु दूसरे गाँव में एक ही दोष है, अपनी जाति के ही कुत्ते बडे खूंखार हैं ।"
चित्रांग ने उत्तर दिया- "मित्रो, उस गाँव में खाने-पीने की चीजें तो बहुत अच्छी हैं, और गृह-पत्नियाँ भी नरम स्वभाव की हैं; किन्तु दूसरे गाँव में एक ही दोष है, अपनी जाति के ही कुत्ते बडे खूंखार हैं।"

कुत्ते का शहरी कुत्ता

एक गाँव में मोती नाम का कुत्ता रहता था। वहाँ सूखा पड़ गया। अन्न के अभाव में कई कुत्ते बेहाल हो गये। मोती ने भी सूखे में भोजन के लिए सुदूर गाँव की राह ली। वहाँ पहुँच कर उसने एक घर में घुसकर रोटियाँ खा लीं। जिसका घर था उसने तो कुछ नहीं कहा, लेकिन घर से बाहर निकला तो आसपास के सब कुत्तों ने उसे घेर लिया। झपट कर लहूलुहान कर दिया। मोती के शरीर पर कई घाव लग गये। मोती ने सोचा- 'इससे तो अपना गाँव ही अच्छा है, यहाँ केवल सूखा है, यहाँ के सब कुत्ते दुश्मन हैं।'

यह सोच कर वह वापिस आ गया। अपने गाँव आने पर उसके साथी कुत्ते ने पूछा- "मोती ! सुदूर गाँव की सैर बता। वह गाँव कैसा है? वहाँ के लोग कैसे हैं? वहाँ खान-पान की चीज़ें कैसी हैं?"

मोती ने उत्तर दिया ----"मित्र, उस गाँव में खान-पान की चीज़ें तो बहुत अच्छी हैं, और रहन-सहन भी बहुत अच्छा है; किन्तु सुदूर गाँव में एक ही कमी है, अपनी जाति के ही कुत्ते दुश्मन हैं।"

अनुवाद - विष्णु कौल ...